ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा स्रेधत। ऋग्वेद 7/32/9
हिंसा- मन, वचन और कर्म से किसी के प्रति वैर मत कर।
Never injure anyone in thought, word and deed.

वर्ष 39, अंक 2 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 16 नवम्बर, 2015 से रविवार 22 नवम्बर, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द जी का 132वां निर्वाणोत्सव सम्पन्न

132 वर्ष बाद भी बहुत कुछ करना शेष : आओ उन कार्यों को पूर्ण करें- महाशय धर्मपाल

ईश्वर के प्रति सच्ची आस्था की सीख दे गया महर्षि दयानन्द का बलिदान- डॉ. सत्यपाल सिंह

राष्ट्रवाद को समाप्त न कर दे जातिवाद-हमें संभलना होगा- ठाकुर विक्रम सिंह

आर्य लोग बाहर से आए थे : ये धारणा निर्मूल करनी ही होगी-डॉ. रमेश भारद्वाज

महर्षि दयानन्द सरस्वती मानवता के पथ-प्रदर्शक थे जिन्होंने समाज में फैली कुरीतियाँ अंधविश्वासों व पाखंडों को दूर करने के लिए कड़ा संघर्ष किया जिसके लिए उन्हें आततायियों ने 16 बार षड्यंत्र करके उन्हें मारने का प्रयास किया। उन्होंने सामाजिक चेतना उत्पन्न करके विश्व को नई दिशा दी। महर्षि का बलिदान हमें ईश्वर के प्रति सच्ची सीख देता है। ये सद्विचार सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह ने आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य द्वारा आयोजित 132वें महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किये।

कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. प्रणव देव शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ से हुआ। जिसमें मुख्य यज्ञमान श्रीमती एवं श्री अजय सहगल, श्री रजनीश गोयनका, श्रीमती रश्मि एवं श्री अरुण प्रकाश वर्मा, श्रीमती मीतू एवं श्री राजीव मल्होत्रा थे। इस अवसर पर ध्वजारोहण सुप्रसिद्ध आर्य नेता ठाकुर विक्रम सिंह जी द्वारा किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के भजनोपदेशक श्री संदीप आर्य द्वारा सुमधुर भजन एवं ऋषि दयानन्द को समर्पित गीत प्रस्तुत किए गए।

समाज सेवी एवं सभा प्रधान महाशय धर्मपाल (चेयरमैन, एम.डी.एच.) ने कहा कि आर्य समाज की स्थापना एवं महर्षि दयानन्द जी के निर्वाण के 132 वर्ष बाद भी बहुत कुछ करना शेष है। हमें उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए संकल्प लेना चाहिए। अतः आओ उन कार्यों को पूर्ण करने में सहयोगी बनें।

दो नई मोबाईल अप्लीकेशन-''Prayer Mantra'' एवं ''Arya Locator'' का हुआ लोकार्पण
विस्तृत जानकारी पृष्ठ... 5

जाति नहीं, देश बचाओं

...हमेशा किसी देश का बुद्धिजीवी वर्ग, विद्वान वर्ग, समाचार पत्र और मीडिया कलम के बल पर देश को एकता अखंडता में बांधते है किन्तु जब यह बात भारत पर लागू करके देखते हैं तो नतीजा बड़ा भयानक दिखाई देता हैं और स्वार्थ की अग्नि में जले लोग भारत की एकता को जलाते दिख जायेंगे।...

पाकिस्तान के समाचार पत्रों में जिस तरीके से बिहार चुनाव के नतीजे प्रथम पृष्ठ पर छपे, भारत के एक राजनैतिक दल बीजेपी की हार को प्रमुखता से छापा और बाद में वहां के आर्मी चीफ व अन्य राजनेतिक दलों ने ट्वीट किये। ये विदेशी शुभकामनायें भले ही चुनाव जीतने वाले दल के लिए खुशी का विषय रहा पर देश के लोगों के लिए जरूर आत्म मंथन का विषय है क्योंकि जब-जब भारत जातिवाद में बंटता है भारत कमजोर होता है और उसकी कमजोरी ही दुश्मनों की मजबूती है और उसका जीता जागता उदहारण है ये विदेशी शुभकामनायें। हमें यह कहना तो नहीं चाहिए था क्योंकि हम किसी राजनैतिक पार्टी या दल के ध्वज के मुकाबले भारतीय तिरंगे का सम्मान करना पसंद करते हैं और चाहते हैं कि समस्त भारत जातिवाद और क्षेत्रवाद के दलदल से बाहर आकर एक सूत्र में पिरोई हुई भारत माता के कंठ की माला बने। लेकिन दुर्भाग्य से देश फिर जातिवाद और भाषावाद और क्षेत्रवाद की तरफ जा रहा है!

कहते हैं, हमेशा किसी देश का बुद्धिजीवी वर्ग, विद्वान वर्ग, समाचार पत्र और मीडिया कलम के बल पर देश को एकता व अखंडता में बांधते हैं किन्तु जब यह बात भारत पर लागू करके देखते हैं तो नतीजा बड़ा भयानक दिखाई देता है और स्वार्थ की अग्नि में जले लोग भारत की एकता को जलाते दिख जायेंगे। मुझे ये सब कहना और लिखना तो नहीं चाहिए पर सच के सूरज को झूट की चादर से नहीं छिपाया जा सकता बिहार चुनाव में बाहरी और बिहारी का मुद्दा बड़ा उछला। मीडिया ने इसे बड़ा रंग दिया क्या बिहार देश का हिस्सा

...शेष पेज 6 पर

पहले इसाईयत बेची, अब चर्च बेच रहे हैं!
विशेष संपादकीय-पढ़ें पृष्ठ 2 पर

महर्षि दयानन्द से प्रेरणा प्राप्त प्रख्यात हिन्दू नेता श्री अशोक सिंघल का निधन

विश्व हिंदू परिषद के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक सिंघल का 89 वर्ष की आयु में 17 नवम्बर को 2.24 बजे मैदांता अस्पताल गुड़गांव में निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार 18 नवम्बर को निगम बोध घाट में वैदिक विधि अनुसार किया गया। जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ अनेक विद्वानों, वक्ताओं, राजनीतिज्ञों ने पहुंच कर उन्हें भाव पूर्ण विदाई दी। उनका जन्म 27 सितम्बर 1926 को आगरा में श्री महावीर सिंघल के घर में हुआ था। नवीं कक्षा में उन्होंने महर्षि दयानन्द की जीवनी पढ़ी और उनका मन आर्य समाज से जुड़ गया। वे 90 के दशक में आयोध्या आन्दोलन से जुड़े और संघ के माध्यम से देश की सेवा करते रहे। उनकी इच्छा विराट वेद विद्यालय खोलने की रही है। हमें उस पर और ज्यादा ध्यान देना होगा। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार की ओर से हार्दिक संवेदनाएं।

स्वाध्याय

आत्मजीवन निर्माण

अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रभ। अहं सूर्य इवाजनि।।

-ऋ. 8/6/10, साम. पू. 2/2/6/7, अथर्व. 20/11/1

*ऋषिः-**काण्वो वत्सः।।** देवता-**इन्द्रः।।** छन्दः-**गायत्री।।***

शब्दार्थः- अहम इत्- मैंने तो हि-निश्चय से पितुः-पालक पिता ऋतस्य-सत्यस्वरूप परमेश्वर की मेधाम्-धारणावती बुद्धि को परिजग्रभ-सब ओर से ग्रहण कर लिया है, अतः अहम्-मैं सूर्यः इव-सूर्य के समान अजनि-हो गया हूं।

विनय- मैं सूर्य के सदृश हो गया हूं। मैं अनुभव करता हूं कि मैं मनुष्यों में सूर्य बन गया हूं। मुझ सूर्य से सत्यज्ञान की किरणें सब ओर निकल रही हैं। जैसे इस हमारे सूर्य से प्राणिमात्र को ताप, प्रकाश और प्राण मिल रहा है, सबका पालन हो रहा है, इसी प्रकार मैं भी ऐसा हो गया हूं कि जो कोई भी मनुष्य मेरे सम्पर्क में आता है उसे मुझसे जान, भक्ति और शक्ति मिलती है, मैं कुछ नहीं करता हूं, परंतु मुझे अनुभव होता है कि मुझसे स्वभावतः जीवन की किरणें चारों ओर निकल रही हैं और चारों ओर के मनुष्यों को उच्च, पवित्र और चेतन बना रही हैं। इसमें मेरा कुछ नहीं है, मैंने तो प्रभु के आदित्य-(सूर्य)-रूप की ठीक प्रकार से उपासना की है, अतः उनका ही सूर्यरूप मुझ द्वारा प्रकट होने लगा है। मैंने बुद्धि द्वारा सूर्य की उपासना की है। मनुष्य का बुद्धिमान (सिर) ही मनुष्य में द्युलोक (सूर्य का लोक) है। मैंने अपनी बुद्धि द्वारा सत्य का ही सब ओर से ग्रहण किया है और ग्रहण करके इसे धारण किया है। धारण करने वाली बुद्धि का नाम ही 'मेधा' है। इस प्रकार मैंने मेधा को प्राप्त किया है, द्युलोक के साथ अपना सम्बन्ध जोड़कर द्युलोक को अपने में ग्रहण किया है, इसीलिए मैं सूर्य के समान हो गया हूं। द्युलोक में स्थित प्रभु का रूप ऋतरूप है, सत्यरूप है। मैंने अपनी सब बुद्धियां, सब ज्ञान, उन सत्यस्वरूप पिता से ही ग्रहण किए हैं। मैंने इसका आग्रह किया है कि मैं सत्य को ही केवल सत्य को ही अपनी बुद्धि में स्थान दूंगा। इस तरह मैंने प्रभु के द्युरूप की सतत उपासना की है, ऋत की मेधा का परिग्रह किया है। इस सत्यबुद्धि के धारणा करने के साथ-साथ मुझमें भक्ति और शक्ति भी आ गई है, मेरा मन और शरीर भी तेजस्वी हो गया है। पालक पिता के सब गुण मुझमें प्रकट हो गये हैं। मैं सूर्य हो गया हूं। हे मुझे सूर्यसमान करने वाले मेरे कारुणिक पितः! तुझ कृत की मेधा को सब प्रकार से पकड़े हुए मैं तेरे चरणों में पड़ा हुआ हूं।

साभार : वैदिक विनय

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

पहले इसाईयत बेची, अब चर्च बेच रहे हैं!

पहले मैं सुनता था कि विदेशियों के एक दो बार पहने कपड़े भारत आते हैं और फिर उन्हें धोकर रेहड़ी पटरियों पर भारत व अन्य एशियाई देशों में बेचा जाता है। दरअसल आज इसाईयत भी पश्चिमी देशों के लिए एक ऐसी ही चीज बन गयी है जिसका उनके अपने निजी जीवन में कोई अर्थ, कोई प्रयोग नहीं रह गया है और अब उसका उपयोग केवल बाहरी मुल्कों में निर्यात के लिए रह गया है जैसे वो अपने पुराने कपड़े पुरानी दवाई बाहरी देशों में भेजते है, ठीक उसी तरह ही अब वो इसाईयत को भेज रहे हैं।

यदि आपको मेरी यह बात जरा भी विचलित करे तो आप गुगल पर (यूरोप एम्पटी चर्च ऑन सेल) यानि के यूरोप के खाली चर्च बिकाऊ हैं, लिखकर देख सकते हैं। इसका कारण यह है कि आज पश्चिमी देशों का अधिकतर नागरिक चर्च में जाना पसंद ही नहीं करता वो लोग अब इसे बेकार और समय बरबाद करने जैसी बाते मानने लगे हैं। अब इसाईयत को खतरा खुद अपने लोगों से हो गया हैं और वो लोग इस पंथ को बचाने के लिए गरीब व विकासशील देशों में फैला रहे हैं दूसरी बात ईसाई पंथ को भले ही पुरुषों ने ईजाद किया हो पर आज यूरोप के गिरजाघरों में अधिकर पादरी महिला मिलेंगी या ये कहो कि वो चर्च अब महिलाओं के कल्ब बनते जा रहे हैं या फिर उन्हें अन्य धर्मो के लोगों को बेच दिया जाता हैं। नीदरलैंड के अर्नहम शहर में कभी सेंट जोसफ चर्च हुआ करती थी आज वहां आपको बच्चें स्केटिंग करते दिख जायेंगे। यही नहीं इग्लैंड के सेंट वॉल चर्च में सर्कस के कलाकार प्रशिक्षण लेते मिल जायेंगे। अकेले गिरजाघर नहीं है जो श्रद्धालुओं की कमी के अभाव से जूझ रहे है बल्कि कुछ जगह तो श्रद्धालुओं की अत्याधिक कमी के कारण चर्च या तो वीरान पडें हैं या फिर शराबखानों में बदल चुके है कुछ जगह चर्चघरों में दुकाने खुली हैं या फिर वो मॉल का रुप धारण कर चुके हैं। इंग्लैंड और स्कॉटलैंड की चर्च तो आपको ऑन लाईन बिक्री के लिए इन्टरनेट पर भी मिल जाएँगी। एक ऐसी ही चर्च वह आठ महिने के लिए बाजार पर है, जो उत्तर-पूर्व मिनीपोलिस में ब्रॉडवे और मध्य रास्ते के चौराहे के पास एक प्रेस्बिटेरियन चर्च हैं। जिसकी कीमत 375,000 डॉलर है।

अब यदि हम चर्च में जाने वाले लोगों के पिछले कुछ आंकड़ें देखें तो 1953 में जहाँ 53 प्रतिशत लोग प्रार्थना के लिए चर्च जाते थे। वहीं 1993 आते-आते वह संख्या घटकर 40 प्रतिशत रह गयी जो अब और भी कम हो गई हैं। कहने के तो इसाई समुदाय में सामूहिक प्रार्थना में विश्वास किया जाता रहा है और सप्ताह में एक बार चर्च जाना जरुरी समझा जाता है लेकिन यूरोप के लोग आज इस सार्वजनिक प्रार्थना पद्धति से ऊब चुके है जिस कारण आयरलैंड में 48 प्रतिशत इटली में 39 प्रतिशत यूके में 12 प्रतिशत और डेनमार्क में 5प्रतिशत लोग ही चर्च जाना पसंद करते हैं। वैसे देखा जाये तो प्रार्थना कभी भीड़ में नहीं होती वो सिर्फ दिखावा होता है क्योंकि प्रार्थना, उपासना, ध्यान हमेशा एकांत का विषय रहा है। लेकिन फिर भी कुछेक पंथो में इसे ही उपासना का तरीका समझा जाता रहा है। चाहें वो शुक्रवार की नमाज हो या रविवार की चर्च में सामूहिक प्रार्थना या फिर माता के जागरण। किन्तु आज पश्चिमी सभ्यता के कुछ लोग विचारशील होकर इस भीड का हिस्सा नहीं बनना चाहते इसी वजह से आज पश्चिमी देशों के पादरी उपेक्षित हैं। हर साल बंद होने वाले गिरजाघरों की संख्या 4 हजार के करीब पहुँच गयी है और नये खुलने वाले चर्चो की संख्या 1 हजार हैं। यद्यपि इसाई लोगों का चर्च में जाना उनकी आस्था का बड़ा प्रतीक नहीं हैं क्योंकि वो लोग चर्च के बहाने अपना दिल बहलाने जाते थे पर आज बदलते परिवेश में भौतिक संसाधनों से मनोरंजन करता यह समुदाय गिरजाघरों से अपना मुख मोड़ चुका हैं। दूसरा कारण यह है कि पश्चिम की राजनीति धर्म पर भी आधारित नहीं है न ही वहां धर्म के खतरे के रोजाना ढोल पीटे जाते और कभी अत्याधिक लागत से खड़े किये गये गिरजाघर आज विज्ञापनों में बिकने को तैयार खड़े हैं।

दरअसल झूठ,फरेब और मानवता की लाशों पर खड़े किये गये संगठन जिन्हें बाद में धर्म के नाम तक दे दिए गये। आज खुद के जाल में फंसते दिखाई दे रहे हैं। जैसे इसाई प्रोटेस्टैंटो और कैथोलिको के बीच खड़ा है। उसी तरह शिया-सुन्नी के फंसा इस्लाम दिखायी दे जायेगा लेकिन इनसे अलग यदि आज सनातन धर्म में व्याप्त कुरीतियां और उसमें फैला अंधविश्वास निकाल दें तो वैदिक धर्म की पताका पूरे विश्व में फिर से लहरा उठेगी। इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है। ***-सम्पादक***

ग्रन्थ परिचय

भागवत खण्डन

प्रश्न 1 : महर्षि के जीवनचरित को पढ़ने से ज्ञात होता है कि उन्होंने भागवत पुराण का बहुत खण्डन किया था। क्या इस विषय पर भी उन्होंने कोई ग्रन्थ लिखा है?

उत्तरः हां, उन्होंने 'भागवत-खण्डनम्' नामक ग्रन्थ लिखा था।

प्रश्न 2: यह खण्डन 'श्रीमद्भागवत' (वैष्णव सम्प्रदाय) के विषय में है अथवा 'देवी भागवत' विषय में?

उत्तरः यह 'भागवत-खण्डनम्' नामक ग्रन्थ 'श्रीमद्भागवत' जो वैष्णव सम्प्रदाय का मुख्य ग्रन्थ है, उसके विषय में है।

प्रश्न 3: इस ग्रन्थ का क्या कोई अन्य नाम भी है?

उत्तरः वैष्णव सम्प्रदाय का प्रमुख ग्रन्थ होने से इसका दूसरा नाम 'वैष्णवमत खण्डन' भी है। पं. लेखराम जी ने इसका नाम 'भड़वाभागवत' एवं 'पाखण्डखण्डन' भी लिखा है।

प्रश्न 4: यह ग्रन्थ कितना बड़ा है?

उत्तरः यह एक छोटी-सी पुस्तिका है, सात पृष्ठ की।

प्रश्न 6: इसकी रचना महर्षि ने कब की थी?

उत्तरः संवत् 1923 के आरम्भ में। यह महर्षि की दूसरी पुस्तक थी।

प्रश्न 7: यह किस भाषा में है?

उत्तरः यह मूल पुस्तक सुन्दर संस्कृत भाषा में है। बाद में श्री युधिष्ठिर मीमांसक जी ने इसका हिन्दी भाषा में भी अनुवाद किया।

प्रश्न 7: क्या यह अभी उपलब्ध है?

उत्तरः हां, यह उपलब्ध है और ऋषि की उपलब्ध पुस्तकों में यह सर्वप्रथम रचित पुस्तक है।

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी) वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें। -मो. 09540040339

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30-8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

वैदिक संस्कृति के मूल आधार

गतांक से आगे

(8.) यज्ञ विधान: वैदिक संस्कृति में प्रत्येक व्यक्ति के लिए दैनिक यज्ञ करने का विधान किया है। शतपथ ब्राह्मण के श्लोक 1/7/45 में यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म कहा गया है- '' यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म।'' व्यापक अर्थ में जितने भी शुभ व उपयोगी कर्म हैं, सभी यज्ञ की श्रेणी में आते हैं। यज्ञ 'यज्' धातु से बना है, जिसका अर्थ होता है- देव पूजा, दान, संगति करण। यज्ञ पर्यावरण की शुद्धि के साथ पर्यावरण के साथ हमारी मानसिक एकरूपता स्थापित करती है। यज्ञ प्रकृति के साथ तादात्मकता, समर्पण और उसके प्रति अनुकूलता प्रगट करने का माध्यम है। अनेक वैज्ञानिकों ने भी माना है कि यज्ञ-अग्नि में पड़ने वाले घृत तथा जड़ी-बूटी युक्त सामग्री से प्रदूषण नष्ट होता है और पर्यावरण शुद्ध व निर्मल होता है। यज्ञ के अनेक रूप हैं यथा अश्वमेध यज्ञ, उपासना यज्ञ, पुत्रेष्टि यज्ञ व वृष्टि यज्ञ आदि। जन साधारण के लिए हवन करना ही यज्ञ का प्रचलित रूप है। वैदिक संस्कृति में प्रत्येक गृहस्थ के लिए निम्नलिखित के लिए निम्नलिखित पांच दैनिक महायज्ञ करने का विधान है:-

(क) ब्रह्म यज्ञ: संध्या ईशोपासना व आराधना।

(ख) देव यज्ञ: अग्नि में घी व सामग्री की आहुति वेद मंत्रों के उच्चारणों के साथ दे कर हवन करना।

(ग) पितृ यज्ञ: माता, पिता एवं गुरु की सेवा, सुश्रूषा एवं सत्कार करना।

(घ) अतिथि यज्ञ: परिचित व अपरिचित सभी अतिथियों एवं आगन्तुकों का भोजन आदि से सत्कार करना।

(ड़) बलिवैश्य दैव यज्ञ: पशु, पक्षी, कीट आदि प्राणियों को यथायोग्य भोजन देना।

(9) योगाभ्यास: महर्षि पतंजलि ने योग दर्शन में योग को मोक्ष प्राप्ति का साधन बताते हुए योग के निम्नलिखित आठ अंग बताए हैं, जिनको अपनाने से शरीर, मन और आत्मा स्वस्थ व शुद्ध रहते हैं। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, ध्यान, धारणा, प्रत्याहार, समाधि। वैदिक संस्कृति के इस महान अंग को संसार के सभी देशों ने अपना लिया है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने 21 जून को योग दिवस घोषित किया है। विश्व के अधिकांश देशों में योग केन्द्र स्थापित हो गये हैं। प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान मर्सिया इलियाड ने अपनी रचना ''योग इम्मार्टिलिटी ऑफ फ्रीडम'' में लिखा है कि ''योग भारतीय मन की विशिष्ट मात्रा का द्योतक है। यह आध्यात्मिक परिकल्पनाओं तथा रूढ़िबद्ध की प्रतिक्रिया है।'' वास्तव में योग क्रिया मनोविज्ञान की प्रक्रिया है।

(10) नारी का सम्मान: वैदिक संस्कृति में नारी का बहुत उच्च स्थान है। इयं वेदि: भुवनस्यनाभि:। अर्थात् नारी परिवार का केन्द्र है। स्त्री को कुल देवी कहा गया है। अथर्ववेद के 14/1/44 मंत्र में स्त्री को परिवार में साम्राज्ञी के पद से विभूषित किया गया है। मनुस्मृति में तो नारी को सर्वोच्च सम्मान देते हुए लिखा है-

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता:।

यत्रैस्तु न पूज्यन्ते, सर्वास्तत्राफला क्रिया।।।

अर्थात् जहां नारी का सम्मान होता है, वहां देवताओं का वास होता है और जहां नारी का अपमान होता है, वहां सभी कार्य निष्फल हो जाते हैं।

मनुस्मृति में एक अन्यत्र स्थान पर लिखा है-

''शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशुतत्कुलम्।

न शोचन्ति तु यत्रैतावर्धते तद्धि सर्वदा।।

अर्थात् जिस कुल में नारियां शोक मग्न रहती हैं, उस कुल का शीघ्र विनाश हो जाता है, जिस कुल में नारियां प्रसन्न रहती हैं, उस कुल की सदा उन्नति होती है। आपस्तम्ब धर्म सूत्र के श्लोक 2/29/3 में कहा गया है कि पति और पत्नी दोनों समान रूप से धन-सम्पत्ति के स्वामी हैं। महाकवि जयशंकर प्रसाद ने कहा- नारी तुम केवल श्रद्धा हो।' नारी को धरा का श्रृंगार भी कहा गया है। वैदिक वाड्.मय में अनेक महान विदूषियों का उल्लेख है-यथा गार्गी, मैत्रेयी, प्रियंवदा, लोप मुद्रा आदि।

(11) भाषा और लिपि: वैदिक वाड्.मय की भाषा-संस्कृत का जन्म भी सृष्टि की उत्पत्ति के साथ हुआ। प्राचीन काल से लेकर आज तक संस्कृत में जो विविध प्रकार का विपुल साहित्य प्रकाशित हुआ, वह संसार की किसी अन्य भाषा में नहीं हुआ। संस्कृत भाषा संसार की सभी भाषाओं की जननी है। संस्कृत भाषा अपनी पूरी वर्णमाला, धातु पाठ, उपसर्ग-प्रत्यय, 3 लिंग, 3 वचन, 8 विभक्ति, सन्धि कौशल, समास-विन्यास और स्वर विज्ञान के लिए अद्वितीय एवं अनुपम है। पाश्चात्य विद्वानों ने संस्कृत को सर्वोत्कृष्ट मानते हुए इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान Franz Bopp का मत है कि ''At one time sanskrit was the one language spoken all over the world.''

अमेरिकन विद्वान विलियम ड्यूरेन्ट ने अपनी कृति ''The Story of Civilization'' में लिखा है, ''जैसे भारत ही मानव जाति की माता है, वैसे ही संस्कृत विश्व की समस्त भाषाओं की जननी है। संस्कृत ही दर्शनशास्त्र तथा गणित का स्रोत है।''

प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान Buron Cuvir ने अपनी रचना, ''Lectures on Natural Sciences'' में मत प्रगट किया है, ''सर्व ज्ञात भाषाओं में से संस्कृत सर्वाधिक नियमित है और विशेषतया इस कारण अद्भुत है कि उसमें यूरोप की भाषाओं तथा प्राचीन भाषाओं-यथा ग्रीक, लेटिन, जर्मन आदि भाषाओं के धातु हैं।

इसी प्रकार एक अन्य पाश्चात्य विद्वान व भाषाशास्त्री Mr. Pickat अपनी पुस्तक ''Origin of Indo-European Languages'' में लिखा है कि ''संस्कृत सबसे सुन्दर भाषा है और लगभग सभी प्रकार से परिपूर्ण है।''

सन् 1786 ई. में रायल एशियाटिक सोसाइटी के अधिवेशन में सर विलियम जोन्स ने घोषित किया था कि ''संस्कृत भाषा कितनी भी प्राचीन क्यों न हो, इसका गठन अद्भुत है। यह ग्रीक भाषा से अधिक निर्दोष, लेटिन से अधिक समृद्ध और दोनों से अधिक उत्कृष्ट व परिमार्जित है। इसके वाबजूद धातुओं और व्याकरणिक रूपों में संस्कृत भाषा ग्रीक व लेटिन से इतना प्रगाढ़ सम्बन्ध रखती है कि यह संयोग नहीं माना जा सकता कि कोई भाषाविद् किसी एक स्रोत से उत्पन्न माने बिना नहीं रह सकता।''

लिपि: संस्कृत की मूल लिपि ब्राह्मी लिपि है जो कालान्तर में कुछ परिवर्तित हुई है। यह लिपि पूर्ण वैज्ञानिक एवं उत्कृष्ट है। इस लिपि में जो लिखा जाता है, वही पढ़ा जाता है एवं वही बोला जाता है। इस लिपि में 13 स्वर और 33 व्यंजन होते हैं। शेष वर्ण संयुक्ताक्षर हैं जो वर्ण केवल प्रयत्न अर्थात् मुख और जिह्वा के

...शेष पेज 7 पर

संस्कृतम्

आचार्यदेवो भव।

(1. प्रस्तावना, 2. गुरुभक्तेरुपयोगिता लाभाश्च, 3. तदभावे दोषा:, 4. दृष्टान्ता:, 5. उपसंहार:।)

भारतीयशास्त्रेषु गुरोर्माहात्म्यं बहु गीतमस्ति। स ईश्वरस्य प्रतिमूर्तिरिति मन्यते। अत एवोच्यते-'आचार्यदेवो भव' इति। आचार्यो देववावत् पूज्यो मान्यश्च। य: शिष्येभ्यो विद्यां ददाति, कर्तव्याकर्तव्यं च बोधयति, सदाचारस्य संयमस्य त्यागस्य तपसश्च शिक्षां ददाति, स आचार्यो गुरुर्वा भवति।

गुरोर्माहात्म्यमेतस्माद् ज्ञायते यद् बालको यदा गुरो: समीपं शिक्षार्थं याति, यज्ञोपवीतं च धारयति, शिक्षां च प्राप्नोति, तदैव स द्विजो द्विजन्मा द्विजातिर्वा भवति। अन्यथा स शुद्र एव भवति। माता पिता च बालकस्य शरीरमेव सृजत:, गुरुस्तु तं विद्यया शिक्षया कर्तव्योद्बोधनेन च मनुष्यंकरोति। अतो मातु: पितुश्च गुरु: गरीयान् भवति। उक्तं च महाभारते-

शरीरमेव सृजत:, पिता माता च भारत।

आचर्यशिष्टा या जाति:, सा दिव्या सा चाऽजराऽमरा।।1।।

गुरुर्गरीयान् पितृतो, मातृतश्चेति मे मति:।।2।।

गुरु: भक्त्या सेवाया शुश्रूषया च तुष्यति, आज्ञापालनेन तत्कथनानुरूपव्यवहारेण च स प्रीतो भवति। गुरु: यदा प्रीतो भवति, तदा स यत् किंचिदपि जानाति, तत्सर्वं स्वशिष्याय समर्पयितुमिच्छति। अतो विद्याप्राप्त्यै गुरुभक्ते: महती आवश्यकता वर्तते। सत्यमेतदुक्तं च-

गुरुशुश्रूषया विद्या, पुष्कलेन धनेन वा।

अथवा विद्यया विद्या, चतुर्थान्नोपलभ्यते।।3।।

न केवलमेतदेव, अपि तु गुरुभक्त्या मनुष्यस्य चतुर्मुखी उन्नतिर्भवति। उक्तं च-

अभिवादनशीलस्य, नित्यं वृद्धोपसेविन:।

चत्वारि तस्य वर्धन्ते, आयुर्विद्या यशो बलम्।।4।।

गुरुभक्त्यैव आरुणि: ब्रह्मज्ञ:, एकलव्यश्च महाधनुर्धरो जात:। गुरुशुश्रूषया गुरुभक्त्यैव च कालिदासादयो महाकवयो जाता:, अन्ये च केचन ऋषयो महर्षय: सिद्धा: कलाविदो विविधशास्त्रविशारदाश्च समभवन्। एष गुरुभक्तेरव महिमा। ये गुरुभक्तिं न कुर्वन्ति, न वा तान् सेवन्ते, तेषां विद्या न प्रकाशते, तेषां यशो न वर्धते, तेषां तेज: क्षीयते, शरीरमायुश्चापि क्षयमुपेत:। ये गुरुभक्ता भवन्ति, तेषां विद्या सदा प्रकाशते, तेषां यशश्च प्रथते, तेषां तेजो विराजते, शरीरमायुश्चापि वृद्धिमेत:। अत: सर्वै: सर्वदा गुरुव: पूज्या मान्याश्च।

रचनानुवादकौमुदी

(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

गृहसूत्रों की उपादेयता?

...गृहसूत्रों का विशेष अध्ययन करने पर कभी-कभी वेद विरुद्ध बातें भी देखने को मिलती हैं। इसके समाधान में शोधार्थी यही कहना चाहेगा कि गृहसूत्र में हर बात को प्रमाण रूप में स्वीकार नहीं करना चाहिए...

वेदों की पठन-पाठन परम्परा का निर्वहन करने के लिए गृहसूत्रों की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। गृह का अर्थ गृहस्थ से सम्बन्धित है अर्थात् गृहस्थ में क्या कर्म करणीय है? क्या अकरणीय हैं? इन सबका विशेष रूप से दिग्दर्शन किया गया है। परन्तु हमें इन्हीं गृहसूत्रों का विशेष अध्ययन करने पर कभी-कभी वेद विरुद्ध बातें भी देखने को मिलती हैं। इसके समाधान में शोधार्थी यही कहना चाहेगा कि गृहसूत्र में हर बात को प्रमाण रूप में स्वीकार नहीं करना चाहिए। मेरे द्वारा अध्ययन किये जाने पर ऋग्वेदीय गृहसूत्रों में कहीं-कहीं पर गृहसूत्रकार तत्कालीन परम्परा का केवल मात्र वर्णन करते हैं तथा कहीं-कहीं अन्य आचार्यो के मतो का भी वर्णन करते हैं। जैसे ऋग्वेदीय गृहसूत्र में वपा शब्द का प्रयोग मिलता है। व्याख्याकारों ने यहां वपा शब्द का अर्थ पशु की चर्बी किया हैं। पशु की चर्बी को अग्नि में आहुति करने से वायु,जल और वातावरण में जो प्रदूषण होगा वह यज्ञीय नहीं हो सकता। परंतु 'वाहवपाम् जातवेदा' इस मन्त्र को समझना जरूरी है। बिना देवता के मन्त्र का अर्थ तर्कसंगत नहीं हो सकता। क्योंकि देवता वर्ण्यविषय होता है। इस मन्त्र का देवता 'जातवेदा' है। इसका अर्थ हुआ जातानी या वेद अथवा जातानि व एन विदु: निरुक्तकार की इस व्याख्या के अनुसार ज्ञानी व्यक्ति जातवेदा हैं उसके लिए वपा के वहन का निवेदन वेद मन्त्र में किया गया है।

वैदिक पद यौगिक होते हैं। वपा शब्द पाणिनि व्याकरण के अनुसार 'डुवप् बीज सन्तानें' धातु से बनता है तो उप्यते या यया यस्यां वा सा वपा इस दृष्टिकोण से अन्न अथवा खेत का नाम वपा है। अत: इस मन्त्र में वपा शब्द से अन्न का ही ग्रहण करना उचित है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इस मन्त्र में वपा का अर्थ भूमि किया है 21 जो कि व्याकरण और निरुक्त वेदोंगों के अनुकूल है। यज्ञीय पवित्र कर्मकाण्ड के भी अनुकूल है। अत: यहां वपा शब्द का अर्थ चर्बी करना कथमपि उचित नहीं हो सकता। आर्च गृहसूत्रों में आश्वलायन, सांख्यायन, कौषितकी आते हैं। ध्यातव्य है कि तत्कालीन परम्परा में वपा शब्द का अर्थ चर्बी किया गया है और बहुधा गृहसूत्रकार चर्बी अर्थ ही स्वीकार करते हैं। मेरा मानना है कि सूत्रकार केवल मात्र तत्कालीन परम्परा का निर्देशन करते हैं न कि प्रमाणित। जैसे-अन्य उदाहरण गृहसूत्रों में वर्णित है।

जो श्राद्ध की पद्धति है उस पद्धति में कौन-सी पद्धति क्यों की जा रही है। जैसे-जल पात्र में तिल डालकर ब्राह्मण के हाथ में देना। उस जल को ब्राह्मण क्या करेंगे? ऐसा कुछ भी उल्लेख नहीं है। गृहसूत्रों में कहा गया है कि ब्राह्मणों के कर लेने पर पिण्ड दान करें। प्रश्न है कि पिण्ड क्या है? कि चीज से निर्मित है? पिण्ड का उद्देश्य क्या है? शास्त्रीय परम्परा में पिण्ड शरीर का नाम है। 'यथा पिण्डे तथा ब्राह्मण्डे' अपने पितरों के आज्ञा में अपने पिण्डों को मनसा, वाचा, कर्मणा, समर्पित कर देना ही वस्तुत: पिण्ड दान है परंतु यहां इस प्रकार का कोई स्पष्टीकरण नहीं किया गया है। इसी प्रसंग मे आगे लिखते हैं कि पिण्ड से अवशिष्ट अन्न को ब्राह्मणों को ही देना चाहिए। इस वर्णन से सिद्ध होता है कि सूत्रकार पिण्ड का मतलब अन्न से बना हुआ पिण्ड ऐसा करते हैं।

अब पुन: प्रश्न होता है कि जब पूर्ण भोजन हो चुका हो तब उन पिण्डों को ब्राह्मण कैसे खायेंगे? पिण्ड भी 3, 5, या 7 है तो भोजन से तृप्त ब्राह्मण इन पिण्डों को किस उदर में सेवन करेंगे? इत्यादि उदाहरणों से प्रतीत होता है कि गृहसूत्रकार ना तो अपने मन्तव्य का वर्णन कर रहे हैं। अपितु तत्कालीन समाज के परम्पराओं का केवल मात्र वर्णन कर रहे हैं। इसी कारण से बहुत सारी अन्ध परम्पराओं का वर्तमान में भी प्रचलन हैं और यह सब कहीं न कहीं गृहसूत्रों का परिणाम हैं। अत: गृहसूत्रों के अध्ययन करते समय विशेष अवधान देना चाहिए तथा हर बात वेदानुकूल ही होनी चाहिए। क्योंकि वेद स्वत: प्रमाण है तथा अन्य ग्रंथों को वेद के प्रमाण की आवश्यकता पड़ती है।

यदि कोई ग्रंथ वेदानुकूल है तो स्वीकरणीय है अन्यथा स्वीकरणीय नहीं है। जिन महानुभावों को इस प्रकार के लेखों पर आपति होती है उन्हें एक बार अवश्य ही गृहसूत्रों को पढ़ लेना चाहिए और अध्ययन करते समय पूर्वाग्रह से ग्रसित नहीं होना चाहिए। मेरा तात्पर्य यह नहीं है कि गृहसूत्र उपयोगी नहीं है परंतु इनमें अच्छे प्रसंगों का भी वर्णन मिलता है। जैसे यज्ञकर्म के समापन पर ब्राह्मणों को भोजन भी अवश्य कराना चाहिए। इस प्रसंग में लिखते हैं कि ब्राह्मण वाणी रूप वय श्रुत, शील और चरित्र इन गुणों से युक्त होना चाहिए। शाङ्.खायन कहते हैं कि इन सब गुणों में भी श्रुत गुण सर्वातिशायी है। इस गुण का अतिक्रमण नहीं करना चाहिए। यहां अत्यन्त स्पष्ट है कि वेद विद्या विद् चरित्र से अतिनिर्मल सुन्दर शीलवान् ब्राह्मणपद वाच्य है। ब्राह्मणत्व में जन्म कारण नहीं है। वर्तमानकाल में जाति व्यवस्था के अन्तर्गत ब्राह्मण कुल में उत्पन्न अनधीत व्यक्ति भी जिस तरह से ब्राह्मण पद वाच्य है।

यह सांख्यायन को स्वीकार नहीं है। जाति व्यवस्था के कारण ब्राह्मणत्व प्राप्त व्यक्ति सामाजिक सौजन्य के कारण नहीं बन सकते। अत: वेद विद् ब्राह्मण ही भोज्य सत्कारी हैं। इस प्रकार से अन्य उदाहरणों का दिग्दर्शन गृहसूत्रकार वेदविद् को ही ब्राह्मण संज्ञा देते हैं। परन्तु वर्तमान में जिस तरह से जाति व्यवस्था का स्वरूप दिखाई देते हैं। वह कहां तक उचित है? ऋग्वेदीय गृह सूत्रों में विभिन्न प्रकार के करणीय और अकरणीय कर्मो का निदर्शन मिलता है।

उदयन आर्य, प्राचार्य,
गुरु विरजानन्द संस्कृत महाविद्यालय
गुरुकुल करतारपुर जालन्धर

Arya Ratna Uday Singh of Arya Pratinidhi Sabha Fiji

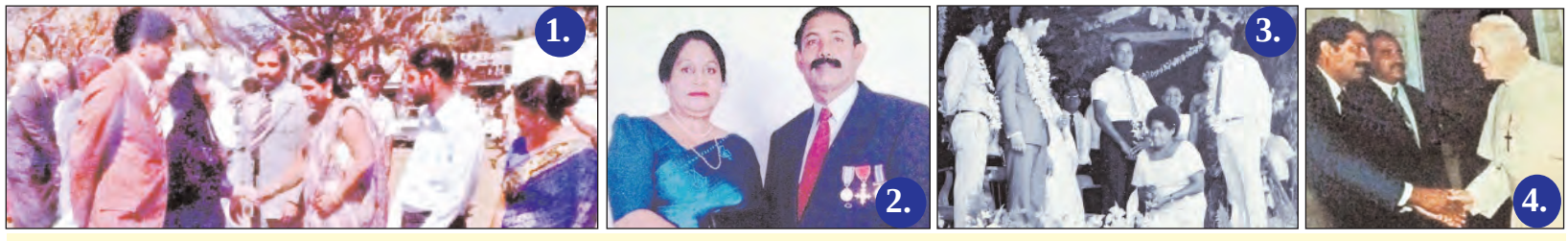

***1.** Meeting Mrs. Indra Gandhi, during her visit to Fiji **2.** Mr. and Mrs. Uday Singh OBE ,JP ,Arya Ratna **3.** Meeting with Prince Charles on his first visit to Fiji in 1970 as Prince of Wales and also received an Independence Medal. **4.** Meeting Pope John II, when he was the National President of Arya Pratinidhi Sabha of Fiji .*

There were many people who helped in building Arya Samaj in Fiji. Late Shri Uday Singh OBE, JP, Arya Ratna was one of them.

The history book of Arya Pratinidhi Sabha of Fiji has mentioned that Shri Uday Singh was great devotee and worshiper of Arya Samaj and his family especially his grandfather Babu Jung Bahadur Singh as he was the founder of Ba Arya Samaj and later was the national president of Arya Pratinidhi Sabha of Fiji.

Singh was a supporter of Arya Samaj in Fiji and played a leading role in the Ba branch of the Arya Pratinidhi Sabha of Fiji. He was the chairman of the Board of Governors of the two schools run by the Arya Samaj in Ba. He was national president of Arya Pratinidhi Sabha of Fiji from 1984-1987. Singh was awarded the highest honor of the Arya Samaj, the title Arya Ratna, in 2002. The Title of Arya Ratna was conferred for exceptionally valuable contribution to Arya Samaj.

On the occassion of the International Arya Mahasammelan Australia-2015 we pay tribute to all of the esteemed leaders and workers, who play major role in field of arya samaj in south Pacific Region i.e. Fiji, Newzealand And Australia.

-Vinay Arya, Dy. Sec.
Sarvadeshik Arya prtinidhi sabha

पृष्ठ 1 का शेष

132 वें महर्षि ...

उन्होंने महान् देशभक्त करतार सिंह सराबा, विष्णु गणेश पिंगले की बलिदान शताब्दी पर स्मरण करते हुए लाला लाजपतराय, लाला हरदयाल सरीखे आर्य नेताओं को भी श्रद्धांजलि दी। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य ने वैदिक धर्म प्रचार के लिए विभिन्न मोबाईल एप्लीकेशन की नई योजनाओं का शुभारंभ करके युवा पीढ़ी को महान् संस्कारों से दीक्षित करने का अभियान चलाने एवं अप्लीकेशन डाउनलोड करने का आह्वान किया। मुख्य वक्ता आचार्य डॉ. रमेश भारद्वाज ने कहा महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सांस्कृतिक रक्षा करके स्वदेशी अन्दोलन को बढ़ावा दिया। आज हमें पुनः विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करके स्वदेशी वस्तुओं को अपनाना होगा। उन्होंने कहा कि आज हमें इस धारणा को निर्मूल करने की महत्ती आवश्यकता है कि आर्य लोग बाहर से आये थे, तभी हमारा देश खुशहाल होगा और हमें अपने इतिहास का गौरव प्राप्त होगा। स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, आर्य नेता धर्मपाल आर्य, सुरेन्द्र रैली, अरुण प्रकाश वर्मा, राजीव आर्य महासचिव, अनेक प्रतिष्ठित जनों ने महर्षि दयानन्द के कर्मयोगी जीवन पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर वैदिक विद्वान रमेश भारद्वाज जी को ''स्वामी विद्यानन्द सरस्वती वैदिक विद्वान पुरस्कार'' एवं श्री धर्मवीर आर्य को ''डॉ. मुमुक्षु आर्य पंडित गुरुदत विद्यार्थी स्मृति पुरस्कार'' से सम्मानित किया गया।

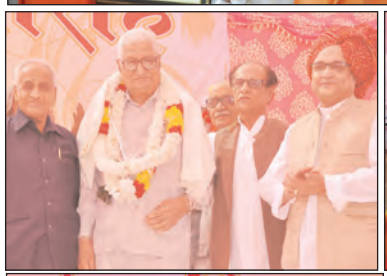

मोबाईल अप्लीकेशन–''प्रेयर मंत्र'' एवं ''आर्य लोकेटर'' का लोकार्पण

महर्षि दयानंद सरस्वती जी के निर्वाण दिवस के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य समाज को तकनीकी रुप से सम्पन्न बनाने एवं अपनी जीवनशैली विशेष बनाने के लिए के दो एप्स लांच किये।

1- **आर्य लोकेटर (Arya Locataor)** आर्य समाज की संस्थाओं को एक प्लेटफार्म पर लाने के लिए और उनकी लोकेशन्स को गूगल पर देखने के लिए इस मोबाइल एप्लीकेशन का निर्माण किया गया है यदि आपकी संस्था का अभी तक इसमें रजिस्ट्रेशन नहीं हो पाया तो अपनी संस्था को इसमें रजिस्टर करें।

2- **प्रेयर मंत्रा (Prayer Mantra)** - समय पर संध्या, और प्रातःकालीन-सायंकालीन मन्त्रों का पाठ करने और याद दिलाने के लिए यह उपयोगी मोबाइल एप्लीकेशन तैयार किया गया है। आप जहां भी हैं वहां के सूर्योदय के समयानुसार यह अप्लीकेशन कार्य करता है। इसमें गायत्री मंत्र एवं भोजन मंत्र, प्रातः एवं सायं संध्या, प्रातः जागरण एवं शयन मंत्र को भी स्थान दिया गया है। अपने एन्ड्राइड फोन पर प्ले स्टोर में जाकर निम्न एप्लीकेशन डाउनलोड करें एवं अपने मित्रों, संबंधियों एवं जनसाधारण तक इस सूचना को पहुंचाने में सहयोग प्रदान करें।

आर्य युवा जागृति संस्थान, हिम्मतपुर काकामई द्वारा

आर्य सम्मलेन सम्पन्न

आर्य युवा जागृति संस्थान, हिम्मतपुर काकामई, एटा द्वारा श्री सेवतीलाल आर्य जी के सहयोग से ग्राम-पटनी में दिनाँक-25 अक्टूबर 2015 से 27 अक्टूबर तक आर्य सम्मलेन का आयोजन किया गया। आर्य सम्मलेन में आचार्य शिवपाल शास्त्री जी ने पूर्ण वैदिक रीति से यज्ञ संपन्न कराया वहीं आचार्य देवराज शास्त्री जी, अधिष्ठाता, आर्ष गुरुकुल एटा व वैदिक विद्वान आचार्य रामस्वरूप आर्य जी ने अपने प्रवचनों से मार्गदर्शन किया।

Continue from last issue

Glimpses of the Rig Veda

One Family-Separate Vocations

"I am a Singer; father is a physician and mother feeds corn into the grinding stones. Having different occupations, and seeking riches, we remain in peace and harmony in the family like the cattle in a common shed. May you flow; O happiness, for sake of the aspirant self," says the verse.

Members of the same family are free to serve the society as per their aptitude and ability in diferent vocations as stated in the above verse. The Vedas envisage a developed society consisting of professions and occupations to meet the needs of the pepople. Mention of the learned teacher, priest, royalty, businessman, labourer, artist, car-builder, carpenter, potter jeweller, hunter, fisherman, physician, astronomer, cowherd, fire-kindler, horse-rider, iron-smelter, goldsmith, drummer,conch-blower, watchman, musician, etc. is made in several contexts in the Vedas which deal with topics covering different professions and related problems of our life in totality. They have the potentiality to promote human culture and civilization. Relating to man at the earliest stage of human history, they carry a message for all times. The ancient seers of the Vedic age develqped positive sciences, and made the world worthwhile to live in with comrorts and purposefulness.

कारुरहं ततो भिषगुपलप्रक्षिणी नना।

नानाधियो वसूयवोऽनु गाइव तस्थिमेन्द्रायेन्दो परि स्रव।। (Rv.ix.112.3)

Karuraham tato bhisak upalaprakshini nana I

nanadhiyo vasuyavo anu gaiva taslhimendraya indo pari srava ll

The Sweet Environment

Any food taken with love and affection given a sweet taste. Even if you chew a bitter item thinking it to be sweet, that also turns sweet. With hatred in mind, even good food does not give any benefit. If a man takes medicine with fear in mind, that does not yield good result even if it is a 'panacea.'

Air, water and plants bear the same quality the time. They equally serve one and all. But depending upon good or evil thought of man, these impart good or bad results. Any thing used in required quantity and principle becomes pleasant. But lack of contol results in misery and grief.

At the start of marriage, the bride and the bridegroom pray to the Lord with Madhuparka (honey, curd and ghee) in hand for blessings in their wedded life to be full of joy and sweetness. They say, "O wind, we feel your pleasant touch. You are spreading new life within us. O river! Your sweet current and sweet music fill our minds with sweetness and joy. The trees, the plants and the world of vegetation all send their good wishes to us." The verse says: "For those following truth, the world becomes sweet and pleasant whereas it becomes full of poison for those who follow the evil path."

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।

माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।। (Rv.i.90.6)

Madhu vata rtayate madhu ksaranti sindhavah I

Madhvirnah santyosadhih II

To Be Continued ...

गोवा भ्रमण यात्रा

14 सितम्बर 2015 को गणपति स्पैशल ट्रेन से गोवा के लिये मुम्बई से प्रस्थान किया। पनवेल, मुम्बई से थिविम गोवा तक की यात्रा के दौरान सैकड़ों सुरंग, हरे-भरे वृक्ष, छोटी-छोटी पहाड़ियां देखते ही बनता था। अगले दिन गोवा पहुंच गये। वहां पर आचार्य उमेश भारद्वाज जी के निर्देशानुसार पिण्टु तथा समीर ने बहुत सुन्दर व्यवस्था की हुई थी। यहां पर दो रात तथा तीन दिन ठहरे।

गोवा का पुराना नाम गोवन, गोमांचल, गोमन्त, गोआपुरी, गोपकपुर, गोपकट्टन है। यह ऐतिहासिक रूप से परशुराम जी का कार्यक्षेत्र रहा है। तिरहुत से आये हुए आर्यो ने यहां पर बस्ती स्थापित की। यह ऐतिहासिक सच्चाई ''गोवा के इतिहास की खुली किताब'' में अंकित हैं। जो कोई देखना चाहे तो राष्ट्रीय संग्रहालय, ओल्ड गोवा में जाकर देख सकते हैं। तिरहुत मण्डल गुजरात तथा विहार में स्थित है।

गोवा को आर्यो ने बसाया। यह बात गोवा के इतिहास की खुली किताब में अंकित है। परंतु संग्रहालय में कार्यरत किन्हीं दुर्भावना या गलती से इस सच्चाई को वर्तमान में छपे पत्रक (हैंडबिल, ब्रोशर) में हटा दिया गया है। इसके संशोधन हेतु वर्तमान में कार्यरत श्री गुरु बागी जी (संग्रहालय निरीक्षक) से बात हुई तथा लिखित रूप से आवेदन पत्र देकर रिसिव करवा दिया था। आशा है कि इस दिशा में देर-सवेर कार्य होगा।

आर्यो द्वारा बसाई गई इस बस्ती में इस समय सैंकड़ों गिरजाघर हैं। कुछेक पौराणिक मंदिर भी हैं। कम से कम वहां एक आर्य समाज मंदिर तो होना ही चाहिए। गोवा भ्रमण हेतु देश-विदेश से पहुंचने वाले आर्य यात्रियों के रहन-सहन, खान-पान आदि की समुचित व्यवस्था होगी, तो शायद दान-दक्षिणा की भी कोई कमी नहीं रहेगी।

आचार्य अनिरुद्ध शास्त्री जी आर्यसमाज मंदिर के नाम से स्वयं के प्रयास से यत्र तत्र यदा कदा यज्ञ-संस्कार के कार्यक्रम करते-करवाते हैं। आचार्य उमेश जी भारद्वाज प्रयत्नशील हैं कि वहां आर्य समाज मंदिर की स्थापना हो। फोन द्वारा ज्ञात हुआ कि आचार्य अनिरुद्ध शास्त्री जी भी इस कार्य हेतु प्रयत्नशील हैं। ईश्वर इनको ऐसी शक्ति, बुद्धि व भक्ति प्रदान करे कि इनकी यह इच्छा पूर्ण हो। वैसे सभी सभा, संगठन मिलकर पुरुषार्थ करें, तो यह कार्य बहुत सुगम हो सकता है। इसके लिए गोवा सरकार से भी सहायता ली जा सकती है। कंळगुट बीच से बागा बीच तक लगभग 4 कि.मी. समुद्र का किनारा यात्रियों का सबसे ज्यादा आकर्षण का केन्द्र है। देखने योग्य स्थानों में से 1. अगोरा फोर्ट/जेल, 2. लाईट हाऊस, 3. मीरा मार्ग बीच, 4. कला एकेडमी, 5. बड़े-बड़े बोट (पानी के जहाज), 6. राजकीय राजधानी पणजी, 7. बन्दरगाह वास्को डि गामा, 8. गिरजाघर, 9. संग्रहालय आदि हैं।

...शेष पेज 8 पर

सार्वदेशिक सभा समय-समय पर गोवा में आर्य समाज स्थापित करने के लिए आर्य महानुभावों से सहयोग की अपील करती रहती है और वहां रहने वाले आपके परिचितों, मित्रों, रिश्तेदारों के संपर्क भेजने के लिए निवेदन करती रही है। आचार्य भद्रकाम वर्णी जी का हम हार्दिक धन्यवाद करते हैं कि उन्होंने भी इस विषय की ओर ध्यान दिलाया है। हम सभी पाठकों एवं आर्य महानुभावों से पुनः निवेदन करते हैं कि यदि गोवा में आपकी कोई भी रिश्तेदार, जानकार, मित्र, परिचित, परिवारिक जन रहते हों और जो वहां आर्य समाज की गतिविधियों को बढ़ावा देना चाहते हों कृपया उनका संपर्क, मोबाईल, ईमेल आदि की सूचना सभा कार्यालय को aryasabha@yahoo.com *पर अथवा मोबाईल नम्बर 9540040322 पर नोट करा दें ताकि वहां आर्य समाज की स्थापना के लिए आगे कार्य हो सके।* ***-विनय आर्य, उपमंत्री***

गोवा के खूनी इतिहास और वहां ईसाई मत की जड़ों के कारणों को जानने के लिए वीर सावरकर की लिखी पुस्तक ''गोमान्तक''' अवश्य पढ़ें। पुस्तक सभा कार्यालय में उपलब्ध है।

पृष्ठ 1 का शेष

जाति नहीं, देश ...

नहीं है जो उसे बाहरी और बिहारी में बाँट दिया गया? कैसे एक मीडिया कर्मी बिहार की गलियों में लोगों से पूछता है आप किस जाति के हो और आप किस पार्टी को वोट करेंगे। क्या यह पत्रकारिता का ओछा उदाहरण नहीं है? पत्रकारों का काम होता है लोगों से उनकी समस्याएं, उनके मौलिक अधिकार, उनकी मौलिक जरूरते, शिक्षा, रोजगार आदि समस्याओं को सार्वजनिक मंचों पर उठायें, न की उन्हें जातिवाद, भेदभाव, छुआछूत आदि में डुबायें।

सब का मानना है इस समय इस देश को औद्योगिक विकास की आवश्यकता है लेकिन उससे पहले मेरा मानना है कि इस देश को सामाजिक विकास की जरूरत है, इसके बाद ही यहाँ आर्थिक और औद्योगिक विकास हो सकता है क्योंकि अभी तो यह देश सामाजिक विकास में ही दिन पर दिन पिछड़ता दिखाई दे रहा है, भारत में चुनाव में जातिवाद के बेहद गाढ़े रंग की बड़ी लंबी दास्तान है। यह प्रकट तौर पर पराजित का सबसे बड़ा उपाय है। बात कभी वोट हमारा, राज तुम्हारा नहीं चलेगा, ऐसे शुरू हुई थी और अब जाति से जाति को काटने की नौबत आ गई है। हर एक प्रान्त में चुनाव जाति के आधार पर ही हो रहा है और खुलेआम हो रहा है। मीडिया इस खेल में खुद शामिल होकर जातिगत वोटों की बन्दर बाँट करता दिख जायेगा, सबका एक ही फार्मूला है, उसी जाति के उम्मीदवार को टिकट, जिसके वोट की गारंटी हो। जाति की काट में जाति। ऐसा हाल तब है, जब देश को विकास की खास दरकार है। मगर यह सब भूल कर देश के लोग अपनी-अपनी जाति को देख रहे हैं, चुनाव से पहले लोगों के पास मुद्दे होते है, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार व सड़क लेकिन जब वह वोट डालने जाता हैं तो उसके दिमाग में सिर्फ एक चीज रहती है जाति, जाति, अपनी जाति। अब देश के लोग यह सोच रहे हों कि उन्हें जातिवाद के कुचक्रों से निकलने कोई अवतार या राजनैतिक दल आएगा तो भूल जाओ! निकलना खुद ही पड़ेगा, अब निकल जाओंगे तो संभल जाओगे नहीं तो न जाति बचेगी न देश बचेगा। -राजीव चौधरी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से

आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलनों का आयोजन : अपने विवाह योग्य बच्चों के नाम पंजीकृत कराएं

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में देश के विभिन्न प्रान्तों के विभिन्न स्थानों पर 11 आर्य परिवार युवक -युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुए हैं। इसी श्रृंखला में आगामी 4 माह में दिसम्बर 2015 से मार्च 2016 के मध्य 12वें, 13वें, 14वें, एवं 15वें परिचय सम्मेलनों की तिथियों निश्चित कर दी गई हैं, जो इस प्रकार हैं -

12वां परिचय सम्मेलन (दिल्ली)
दिनांक 6 दिसम्बर, 2015
आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली
अन्तिम तिथि 20 नवम्बर,2015

13वां परिचय सम्मेलन (गुजरात)
दिनांक 3 जनवरी, 2016
वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ (गुज.)
अन्तिम तिथि 20 दिसम्बर, 2015

14वां परिचय सम्मेलन (म. प्रदेश)
दिनांक 14 फरवरी, 2016
आर्यसमाज रेलवे कालोनी, इन्द्रा नगर, रतलाम (म.प्र.)
अन्तिम तिथि 30 जनवरी,2016

15वां परिचय सम्मेलन (ज.-कश्मीर)
दिनांक 27 मार्च, 2016
आर्यसमाज बक्शी नगर, जम्मू
अन्तिम तिथि 10 मार्च, 2016

आपसे निवेदन है कि आपके स्वयं के बच्चे जो विवाह योग्य हैं अथवा आपके किसी परिचित के बच्चे जो किसी भी आर्य समाज से जुड़े हों, उनको भी यह सूचना पहुंचाकर प्रोत्साहित करें। **फार्म www.thearyasamaj.org/aryasandesh** से डाउन लोड किए जा सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए राष्ट्रीय अथवा प्रान्तीय संयोजक से सम्पर्क करें।

: निवेदक :

प्रकाश आर्य	**विनय आर्य**	**अर्जुन देव चड्ढ़ा**	**एस.पी.सिंह**
मंत्री (09826655117)	महामंत्री (9958174441)	राष्ट्रीय संयोजक(09414187428)	संयोजक दिल्ली (09540040324)
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा	**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**	**आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन**	

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्त्वावधान में आर्य युवा सम्मेलन

6 दिसम्बर, 2015 प्रातः 9 बजे स्थान : आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, जी. टी. रोड पानीपत

आप सब इष्टमित्रों सहित सपरिवार पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

निवेदक : आचार्य विजयपाल (प्रधान) **मा. रामपाल आर्य** (मन्त्री) **आचार्य योगेन्द्र आर्य** (संयोजक) **आचार्य सर्वमित्र आर्य** (सह संयोजक)

पृष्ठ 3 का शेष

वैदिक संस्कृति ...

इधर-उधर हिलाने, सिकोड़ने और फैलना से बोले जाते हैं, उन्हें स्वर कहते हैं। किन्तु जिनके उच्चारण में स्थान और प्रयत्न दोनों की सहायता लेनी पड़ती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। संस्कृत स्वरों के द्वारा अर्थ को निश्चित करती है। यह कौशल संसार की अन्य किसी भाषा में नहीं है।

(12) विश्व बन्धुत्व : माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः। -अथर्ववेद 12/1/12

अर्थात् सम्पूर्ण पृथ्वी हमारी माता है।

वैदिक संस्कृति विश्व को परिवार मानती है। वेद में घोषण की गई है कि ''उदार चरितांनाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम्'' अर्थात् सम्पूर्ण पृथ्वी पर रहने वाले एक परिवार हैं। ऋग्वेद में आह्वान किया गया है इन्द्रवर्धन्तो अप्तुरः कृशावन्तो विश्वमार्यम् अपघ्नन्तोऽराब्साः अर्थात् हे सत्कर्म करने वालों सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनाओ। अतः सम्पूर्ण विश्व में वैदिक संस्कृति के प्रचार व प्रसार स्वरूप संसार के सब मानव वैदिक संस्कृति के केन्द्र भारत में शिक्षा प्राप्ति, चरित्र निर्माण तथा धर्म एवं संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करने हेतु आते थे। मनुस्मृति में लिखा है कि-

''एतद्वेश प्रसूतस्य सकाशाद अग्रजन्मनः।

स्वं स्वं चरित्र शिक्षरेन् पृथिव्यां सर्व मानवाः।।

वैदिक संस्कृति में केवल भारत के लोगों के सुख, नीरोगता एवं कल्याण की कामना ही नहीं की गई है, अपितु, संसार के सभी लोगों के सुख व कल्याण के लिए प्रार्थना की गई है। यथा- सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दुःख भाग्भवेत्।

अन्त में हम राष्ट्रकवि मैथिलीकरण गुप्त के निम्नलिखित काव्यांश के साथ अपने कथन को समाप्त करते हैं-

'हां' और 'ना' कहना
अन्य जन न थे जब जानते।
थे ईश के आदेश से
हम वेद मंत्र बखानते।।
संसार को हमीं ने
ज्ञान भिक्षा दान की।
आचार की, व्यवहार की,
व्यापार की, विज्ञान की।।

- गौरीशंकर भारद्वाज,
पूर्व विधायक

आर्य प्रतिनिधि सभा, वाराणसी द्वारा वैदिक महोत्सव का आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा, वाराणसी के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के 146वें वर्ष पर दिनांक 21 से 23 नवम्बर 2015 को वैदिक महोत्सव का आयोजन किया जाएगा। समापन समारोह के अवसर पर 23 नवम्बर को प्रातः 8 से 10 बजे यज्ञ, प्रवचन, भजन एवं शंका समाधान, प्रातः 10.30 से 1 बजे तकआध्यात्मिक प्रवचन एवं भवन, 2.30 से 5.30 बजे व्याख्यान होगा।

अर्जुनदेव चढ्डा का भव्य स्वागत

आर्य समाज में जिला आर्य प्रतिनिधि सभा को प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा ने वैदिक साहित्य केन्द्र का उद्घाटन किया। श्री अर्जुनदेव चढ्डा राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा जयपुर के उपप्रधान चुने जाने के पश्चात प्रथम बार रावतभाटा पधारने पर आर्य समाज रावतभाटा के द्वारा उनका भव्य स्वागत किया गया। आर्यसमाज के प्रधान नरदेव आर्य ने श्री चढ्डा का माल्यार्पण, शॉल ओढ़ाकर एवं साफा पहनाकर स्वागत किया।

आर्य समाज धामावाला, देहरादून का 136वां वार्षिक महोत्सव

आर्य समाज धामावाला, देहरादून के तत्वावधान में 136वां वार्षिक महोत्सव दिनांक 27 से 29 नवम्बर 2015 तक मनाया जाएगा। समापन समारोह के अवसर पर यज्ञ प्रातः 8.30 से 9.15 बजे, भजन प्रातः 9.15 से 9.45 बजे, प्रवचन प्रातः 9.45 से 10.15 बजे, भजन प्रातः 10.15 से 11.00 बजे होगा।

शोक समाचार

पं. जगमाल आर्य का निधन

आर्य समाज जनकपुरी बी. ब्लॉक के पुरोहित पंडित जगमाल आर्य जी का लगभग 75 वर्ष की आयु में 18 अक्टूबर को निधन हो गया। वे आर्य समाज अशोक नगर से भी जुड़े रहे। वे अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती भगवान देवी, पुत्र-पुत्रवधु, पौत्र, पौत्री से भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

ऋषि राज वर्मा को पितृ शोक

आर्य समाज राधेपुरी के मंत्री श्री ऋषि राज वर्मा के पिता जी श्री वेद प्रकाश वर्मा जी का 17 अक्टूबर को निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार निगम बोध घाट पर हुआ। उनकी स्मृति में शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा आर्य समाज प्रीत विहार में 20 अक्टूबर को सम्पन्न हुई। जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ आसपास के अनेक आर्य समाज के अधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

माता कैलाशवन्ती आर्या का निधन

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के पूर्व संचालक श्री वीरेन्द्र आर्य जी की पूज्या माता श्रीमती कैलाशवन्ती आर्या जी का 11 नवम्बर, 2015 (दीपावली) को अकस्मात् देहावसान हो गया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा 14 नवम्बर को सामुदायिक भवन रानीबाग में सम्पन्न हुए। इस अवसर पर सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामंत्री विनय आर्य, सार्वदेशिक सभा के मंत्री श्री प्रकाश आर्य, सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती, आर्य वीर दल एवं अनेक आर्य समाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

16 नवम्बर से 22 नवम्बर, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 19 नवम्बर/ 20 नवम्बर, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 18 नवम्बर, 2015

स्वास्थ्य चर्चा

दिल ताकतवर बने

1. एक रत्ती केसर को 50 ग्राम पानी मिट्टी की कुलहड़ी में रात को भिगोएं। प्रात: 20-25 किशमिश खाकर इस पानी को पीयें। ऐसा 15 दिन करें।

2. रेहान के बीज दस ग्राम को गुलाब जल 100 ग्राम में एक घंटे भिगोने के बाद खांड मिलाकर प्रात: सायं प्रयोग करें।

3. 10 ग्राम सौंफ 100 ग्राम पानी में रात को भिगोएं। प्रात: पीस छान कर खांड मिलाकर पी लें।

4. जीरा सफेद पिसा 10 ग्राम पानी 100 ग्राम पानी में रात को भिगोएं। प्रात: छान कर खांड मिलाकर पी लें।

5. शर्बत चंदन दो-दो चम्मच अर्क गुलाब एक कप में प्रात: सांय पीयें।

दिल का दर्द

1. शुद्धि कलमीशोरा 10 ग्राम पीसकर मूली के रस 100 ग्राम में घोंटें। गाढा होने पर काली मिर्च बराबर गोलियां बना छाया में सूखा लें। दर्द के समय एक गोली पानी से लें।

2. सौंफ 5 ग्राम धनिया सूखा 3 ग्राम दरदरा कूट रात को गुलाब जल 100 ग्राम में भिगोएं प्रात: पीस छान लें। पहले किसमिस खाकर ऊपर से इस पानी को पीने से दिल की धड़कन ठीक हो जाती है।

वैद्य खेम भाई द्वारा रचित ''चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद'' पुस्तक से साभार यह पुस्तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में भी उपलब्ध है। अपना आदेश मो. 09540040339 पर या सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय 15 हनुमान रोड दिल्ली-110001 के पते पर भेज सकते हैं।

प्रतिष्ठा में,

कैलेण्डर वर्ष 2016

बढ़िया 130 ग्रा. आर्ट पेपर

20×30 इंच के आकार में

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

आज ही अपने आर्डर बुक कराएं

250 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (200/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

दूरभाष : 011-23360150, मो. 09540040339

पृष्ठ 6 का शेष गोवा भ्रमण ...

यहां पर अभी भी पुर्त्तगालियों द्वारा चलाई गई पंचायती नियम प्रबल रूप से लागू हैं। स्वतंत्र भारत में क्या यह ठीक है? यह चिन्तनीय है।

इस स्थानों को देखने के उपरांत अनुभव किया कि यह गोवा प्राचीन काल से व्यापार का केन्द्र बिन्दु रहा है। अत: विदेशियों ने समय-समय पर इसको अपना निशाना भी बनाया है। आजकल मौज-मस्ती करने का प्रमुख स्थान बना हुआ है। जुआ खेलने के भी बड़े-बड़े अड्डे हैं। कदाचार, भ्रष्टाचार आदि के मामले यहां अन्य शहरों की तुलना में बहुत कम है। मेरे अनुमान से यह अच्छी बात है। बहुत अच्छी बात यह है कि गोवा खुशहाल है। वहां के लोग मिलनसार हैं। बात करने में व्यवहार कुशल हैं। यात्रियों के साथ अच्छा व्यवहार करते हुए स्वागत करते हैं, क्योंकि इनसे उनकी जीविका चलती है। यात्रीगण भी वहां नियमों का प्राय: पालन करते हैं।

इस प्रकार से गोवा भ्रमण यात्रा निर्विघ्न रूप से सम्पन्न हुआ। हितकर जानकारी से युक्त यह वृतान्त आपकी सेवा में समर्पित है। शायद आपको कुछ नई जानकारी मिलेगी।

-आचार्य भद्रकाम वर्णी

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

मात्र 90/- किलो (10, 20 किलो की पैकिंग)

अब 5 किलो, 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी उपलब्ध

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1,

दूरभाष - 23360150, 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: thearyasamaj.com से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह